Page No. : 14-19

SHODH GURU

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF EDUCATION

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले बच्चों के अभिभावकों की समस्याओं का गुणात्मक अध्ययन

डॉ. उजमा एजाज़

पोस्ट डॉक्टरेट शोध छात्रा, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ,बिलासपुर, छत्तीसगढ़

Email id : uzmaaj14@gmail.com

डॉ. संबित कुमार पाढ़ी

प्रोफेसर, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ,बिलासपुर ,छत्तीसगढ़

सारांश:-

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर विकास से संबंधित एक विकलांगता है जो कि बच्चे के सामाजिक ,व्यवहारिक एवं संप्रेषण कौशल को कई तरीके से प्रभावित करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार विश्व स्तर पर 160 में से 1 बच्चे को ऑटिज्म होता है । यह एक ऐसे विकृतियों का समूह है जिसमें विकास के एक या एक से अधिक क्षेत्र प्रभावित होते हैं। इंस्टिट्यूट ऑफ़ न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर एवं स्ट्रोक के अनुसार अनुवांशिक या पर्यावरण दोनों ही ऑटिज्म की संभावना को निर्धारित करते हैं । प्रस्तुत शोध अध्ययन ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले बच्चों के अभिभावकों की समस्याएं पर आधारित है । इस शोध अध्ययन में शोध प्रविधि के रूप में साक्षात्कार को अपनाया गया हैं । न्यादर्श के रूप में छत्तीसगढ़ राज्य के ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले बच्चों के 20 अभिभावकों को चयनित किया गया है । इनका चयन उद्देश्य पूर्ण न्यादर्श प्रविधि के द्वारा किया गया । शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग करते हुए प्रदत संकलित किए गए । प्रदत्त विश्लेषण हेतु विषय वस्तु विश्लेषण का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर से पीड़ित बच्चों को हमेशा विशेष सहयोग की जरूरत पड़ती है । आटिज्म बच्चों के अभिभावकों को बच्चों को सिखाने के लिए बहुत अधिक प्रयास करने पड़ते है । आटिज्म स्पेक्ट्रम डिसआर्डर वाले बच्चों में व्यवहारिक, समाजिक, शारीरिक विकास, बोल चाल संबंधी समस्याओं का मिलाजुला व्यवहार देखने को मिलता है । इसलिए आटिज्म वाले बच्चे को बाहर लेकर जाना अभिभावकों के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण होता है । सयुंक्त परिवार वालों की तुलना में एकांकी परिवार वालों के लिए यह और भी चुनौतीपूर्ण होता है । एकांकी परिवार वालों को बच्चों की देख-भाल करने में बहुत अधिक समस्या भी होती है जबकि संयुक्त परिवार में सभी सदस्य मिलकर बच्चे की देखभाल करते हैं । अध्ययन में यह भी पाया गया कि इन बच्चों के अभिभावक अपने बच्चे के भविष्य को लेकर बहुत ही चिंतित, दुखी, हताश और निराश रहते हैं ।

बीज़ शब्द - ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर, सामाजिक व्यवहार , संचार कौशल,

प्रस्तावना:- ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर एक आजीवन रहने वाली तंत्रिका विकास् संबधी विकलांगता है जिसकी विशेषता है, सामाजिक समझ और संचार में लगातार और व्यापक क्षीणता एवं खराब अनुकूलीत कामकाज, और प्रतिबंधित या दोहराव वाले व्यवहार। ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर एक ऐसी जटिल स्थिति है, जिसमें पीड़ित बच्चे का दिमाग अन्य बच्चों के दिमाग की तुलना में अलग तरीके से काम करता है अर्थात यह एक विकास संबंधी विकार है जिसमें बच्चे को बातचीत करने में, पढ़ने -लिखने में और समाज में मेल-जोल बढ़ाने में काफी परेशानियां होती है। ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर जीवन भर रहने वाली एक ऐसी समस्या है जिस में बच्चे को हमेशा विशेष सहयोग की जरूरत पड़ती है । हालाँकि उम्र बढ़ने के साथ-साथ ऑटिज्म के लक्षण कम होने लगते हैं जिससे वह आगे चलकर सामान्य बच्चों की तरह ही जीवन जी सकते है इसलिए ऑटिस्टिक बच्चों के माता-पिता को बच्चों की बदलती जरूरतों के साथ तालमेल बैठाने की काफी आवश्यकता होती है । ऑटिज्म से पीड़ित बच्चे हर दिन एक ही दिनचर्या पसंद करते हैं; इसमें बदलाव करने पर वे बहुत परेशान हो जाते हैं । प्रारंभिक अवस्था में ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले बच्चे बोल नहीं पाते, उन्हें दूसरे बच्चों के साथ बातचीत करने के लिए गैर मौखिक व्यवहार का उपयोग करने में भी काफी समस्या होती है । यह डिसऑर्डर एक प्रकार का नहीं होता बल्कि कई प्रकार का होता है जो अनुवांशिक और पर्यावरणीय प्रभाव के सयोजनों के कारण होता है (एडक, 2019) । इस डिसऑर्डर के लक्षण आमतौर पर 12 से 18 महीने की आयु में दिखाई देते हैं जो सामान्य से लेकर गंभीर तक हो सकते हैं । किसी वस्तु की तरफ इशारा करना, अपनी मां की आवाज सुनकर मुस्कुराना या प्रतिक्रिया न देना, आंखों में आंखें मिला कर ना देखना, अकेले रहना, दूसरे बच्चों से घुलने मिलने से बचना, किसी एक जगह पर घंटों बैठना, किसी एक ही वस्तु पर ध्यान देना, एक ही काम को बार-बार करना, दूसरे व्यक्ति के शब्द को दोहराना, किसी काम को न करना, किसी विशेष प्रकार की आवाज, स्वाद और गंध के प्रति अजीब प्रतिक्रिया देना आदि कुछ सामान्य लक्षण है जो बच्चों में दिखाई देते है । इस विकार में दिमाग के बाकी शरीर से सम्प्रेषण करने की क्षमता कमजोर हो जाती है, इसलिए वह किस अंग को किस तरह काम करना है यह संदेश ठीक से नहीं दे पाता है । यह अवस्था बच्चे के जीवन के प्रारंभ से ही उसके साथ होती है और जीवन भर बनी रहती है । ऑटिज्म से पीड़ित बच्चे को अन्य समस्याएं जैसे डिस्लेक्सिया, डिस्प्रेक्सिया, अटेंशन डिफिसिट हाइपरएक्टिविटी, लर्निंग डिसेबिलिटी, मेंटल हेल्थ प्रॉब्लम आदि समस्याएं भी होती है । जिसका निदान, मनोवैज्ञानिकों की सलाह, पुनर्वास सेवाएं, व्यवहार उपचार, कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम, अत्यधिक देखभाल द्वारा ही किया जा सकता है ।

अध्ययन का औचित्य:- इंटरनेशनल क्लीनिकल एपिडेमियोलॉजी नेटवर्क ट्रस्ट (2016) के सर्वेक्षण के अनुसार भारत में 2 से 9 वर्ष के बच्चों में एक से डेढ़ प्रतिशत बच्चों को ऑटिज्म है और यह संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। ऑटिज्म लड़कियों की अपेक्षा लड़कों में 4 गुना अधिक होता है तथा इसमें प्रजाति या सामाजिक सीमा नहीं होती है । ऑटिज्म आजीवन रहने वाला विकार है इसलिए बच्चे को इस विकार के साथ प्रबंधित करना बहुत आवश्यक है । आटिज्म का कोई एक कारण नहीं है । समय से पूर्व बच्चे का जन्म, जन्म के बाद बच्चे का देरी से रोना, पारिवारिक तनाव, माता द्वारा अत्यधिक दवाइयों का सेवन, कार्यस्थल का तनाव, संक्रमण, संवेगिक/व्यवहारिक विकार आटिज्म के लिए उत्तरदायी कारक है । किसी बच्चे का आटिज्म से प्रभावित होना जीवन भर उसके परिवार के लिए चिंता का विषय बन जाता है । परिवार में भी सबसे अधिक प्रभाव ऐसे बच्चों के अभिभावकों पर पड़ता है । ऐसे बच्चों के अभिभावकों को बहुत सी समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। इन्ही

सब आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने इस विषय पर अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की। इस अध्ययन में ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले बच्चों के अभिभावकों की समस्याओं का अध्ययन किया गया है।

शोध उद्देश्य:- प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले बच्चों के अभिभावकों की समस्याओं का अध्ययन करना है।

शोध विधि:- यह शोध अध्ययन एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण है एवं इसकी प्रकृति गुणात्मक है। ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले बच्चों के अभिभावकों की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए शोधार्थी द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के 20 अभिभावकों का चयन किया गया । इनका चयन उद्देश्य पूर्ण न्यादर्श प्रविधि के द्वारा किया गया है।

शोध उपकरण:- प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित सरचित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले बच्चों के अभिभावकों से साक्षात्कार लिया गया। इस अनुसूची में कुल 32 प्रश्न थे जिसका निर्माण शोधार्थी द्वारा उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए किया गया । यह प्रश्न विभिन्न बिंदुओं जैसे आटिज्म बच्चों के अभिभावकों की सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, एवं शैक्षिक समस्याओं पर आधारित थे ।

आंकड़ों का विश्लेषण एवम् व्याख्या:- साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से प्राप्त वर्णनात्मक प्रकृति के प्रदतो का विश्लेषण अनेक पदों में किया गया और उन्हें शोध उद्देश्यों के अनुसार व्यवस्थित किया गया। इन प्रदतो को विषय वस्तु विश्लेषण के माध्यम से विश्लेषित कर निष्कर्ष निकाला गया कि :-

1) सयुंक्त परिवार में आटिज्म बच्चे अपने परिवार के सदस्यों के साथ एवं एकांकी परिवार वालों के बच्चे अपनी माता के साथ ज्यादा समय बिताते हैं । तलाक शुदा माताओं का कथन था कि वे अकेले ही अपने बच्चे की देखभाल करती है, जिससे उन्हें बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है ।
2) आटिज्म बच्चों के अभिभावकों को सार्वजनिक स्थलों में अपने बच्चे को लेकर जाने पर बहुत ध्यान रखना पड़ता था । उन्हें हमेशा भय रहता है कि "वह कही चला न जाए, तोड़फोड़ ना करें इसलिए इन बच्चों को बाहर लेकर जाना अभिभावकों के लिए बहुत ही चुनौती पूर्ण होता है।
3) अध्ययन में पाया गया कि कई बार अभिभावकों में हताशा और निराशा की भावना मन में घर कर जाती थी और वे बहुत मुश्किल से अपने आप को संभालते हुए बच्चे का उपचार करवाते थे । इससे सम्बंधित उनके कथन थे "अपने बच्चे के व्यवहार को देख कर शुरुआत में बहुत हताश होती थी; हमें लगता था कि हमारे बच्चे के साथ ही ऐसा क्यों हुआ; लेकिन फिर हमने खुद को संभाला और अपने बच्चे के उपचार को आरंभ किया" । कई माता-पिता इसे एक चुनौती की तरह भी लेते थे ।

4) आटिज्म बच्चों के अभिभावकों को बच्चों को सिखाने के लिए बहुत अधिक प्रयास करने पड़ते है और एक ही क्रिया को बार-बार दोहराना पड़ता है । एक अभिभावक का कथन था कि "जब

बच्चे को कुछ सिखाया जाय और वह प्रतिक्रिया नहीं दे तो वे लोग उसे फिर से सिखाने कि कोशिश करते है, चिडचिड़ाते नहीं है"।

5) अध्ययन में यह पाया गया कि समान्य बच्चों की तुलना में ऑटिज्म वाले बच्चों की बहुत अधिक देखभाल करनी पड़ती है और बहुत ज्यादा ध्यान देना पड़ता है क्योकि यह बच्चे अपने हर काम के लिए दूसरों पर निर्भर रहते है ।

6) अध्ययन में यह पाया गया कि आटिज्म बच्चों के शिक्षा के लिए अभिभावकों को कोई शासकीय सुविधा नहीं मिलती थी और न ही आटिज्म बच्चों के लिए अलग से कोई शासकीय विद्यालय उपलब्ध है । बच्चों की शिक्षा हेतु सभी अभिभावक निजी विद्यालय पर ही निर्भर थे । एक अभिभावक का कथन था कि "बच्चों की शिक्षा हेतु कोई सरकारी सुविधा नहीं मिलती है"; "बच्चों की शिक्षा हेतु अलग से कोई सरकारी स्कूल नहीं है"; "बच्चों को शिक्षा हेतु हम निजी विशेष स्कूल में ही एडमिशन करवाते हैं; इन स्कूलों में सभी विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को एक साथ पढ़ाया जाता है"।

7) अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों से अभिभावक पूर्ण रूप से संतुष्ट थे लेकिन कोरोना के कारण विद्यालय बंद होने से उनके बच्चों के व्यवहार पूर्ववत हो गए थे जिससे उनको बहुत ही व्यथा/पीड़ा हुई थी । अभिभावकों के कुछ कथन इस प्रकार थे "स्कूल भेजने के पश्चात उनके बच्चे के व्यवहार में बहुत ज्यादा परिवर्तन आ रहा था परंतु कोरोना के कारण दो साल स्कूल बंद होने की वजह से उनका व्यवहार फिर से पहले जैसे ही हो गया है"; "हम फिर से वही आकर खड़े हो गए हैं जहां से हमने चलना शुरू किया था" ।

8) आटिज्म बच्चों के अभिभावक बच्चे के भविष्य को लेकर बहुत ही चिंतित, दुखी, हताश और निराश रहते थे । उन्हें अपने बच्चे का भविष्य अंधकारमय लगता है और कभी-कभी उनके मन में जीवन जीने की आशा भी दिखाई नहीं पड़ती थी । इससे सम्बंधित उनके कथन कुछ इस प्रकार थे "मेरा बच्चा जल्द से जल्द ठीक हो जाये और भविष्य में कुछ-न-कुछ रोजगार करने लायक हो सके", एक अभिभावक का कथन था कि "मेरे दोनों बच्चों को ही आटिज्म है, इसलिए उनके भविष्य को लेकर बहुत चिंतित रहती हूं; जब तक हम लोग जीवित है तो ठीक है पर हमारे बाद इन बच्चों को कौन संभालेगा, यही सोच-सोच कर परेशान रहती हूँ", एक अभिभावक का कथन था कि "मुझे अपने बच्चे का भविष्य बहुत ही अंधकार मय दिखता है, अपने बच्चे के भविष्य को लेकर बहुत दुखी रहती हू , कभी-कभी तो मुझे ऐसा लगता है कि खुद भी मर जाऊं और उसे भी मार दू "; "एक अभिभावक का कथन था कि मेरी तो लड़की है इसलिए मुझे उसके भविष्य को लेकर और अधिक चिंता रहती है खास तौर पर उसकी शादी को लेकर " ।

9) आटिज्म बच्चों के सभी अभिभावकों को अपने बच्चे के लिए स्कूल का चयन करने में भी बहुत अधिक समस्या होती है। इस संबध में एक अभिभावक (माता) का कथन था कि "उनका बच्चा बहुत उछल कूद करता था, एक जगह नहीं बैठ सकता था, इसलिए स्कूल वालों ने उसे विशेष स्कूल में एडमिशन करवाने की सलाह दी, क्योकि उसके इस व्यवहार से बाकी बच्चों की पढ़ाई डिस्टर्ब हो रही थी" । एक अभिभावक (माता) का कथन था कि "उनका बच्चा शिक्षकों द्वारा कुछ भी पूछे जाने पर प्रतिक्रिया नहीं देता था इसलिए स्कूल वालों ने उसे विशेष स्कूल में एडमिशन करवाने की सलाह दी । वे आटिज्म बच्चों को अपने स्कूल में नहीं रखना चाहते है । उनका मानना है कि इन बच्चों के व्यवहार के कारण बच्चों की पढ़ाई काफी

प्रभावित होती है" । उपरोक्त कथनों से यह स्पष्ट होता है की सभी अभिभावक अपने बच्चों को सामान्य विद्यालय में नहीं भेजते है क्यों कि शिक्षकों का मानना है कि इन बच्चों के कारण अन्य बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है ।

10) आटिज्म बच्चों के अभिभावकों को अपने बच्चों के उपचार के लिए किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता भी नहीं मिलती है जिसकी वजह से भी उन्हें बहुत सी समस्याएं होती है।

निष्कर्ष

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर जीवन भर रहने वाली

समस्या है जिस में बच्चे को हमेशा विशेष सहयोग की जरूरत पड़ती है । आटिज्म से ग्रस्त बच्चे बाकी बच्चों से अलग सुनते, देखते और महसूस करते हैं ।आटिज्म बच्चों के अभिभावकों को बच्चों को सिखाने के लिए बहुत अधिक प्रयास करने पड़ते है । आटिज्म स्पेक्ट्रम डिसआर्डर वाले बच्चों में व्यवहारिक, समाजिक, शारीरिक विकास, बोल चाल संबंधी समस्याओं का मिलाजुला व्यवहार देखने को मिलता है । इसलिए आटिज्म वाले बच्चे को बाहर लेकर जाना अभिभावकों के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण होता है । अभिभावकों को इन बच्चों के उपचार एवं शिक्षा के लिए किसी भी प्रकार की सरकारी सुविधा नहीं मिलती है एवं इन बच्चे को सिखाने/पढ़ाने हेतु अभिभावकों द्वारा चार्ट, मोबाइल, एवं यू ट्यूब के कार्यक्रमों का उपयोग किया जाता हैं । आटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर वाले बच्चों को सामान्य कक्षाओं में लाभान्वित नहीं किया जा सकता, इसके लिए विशिष्ट शिक्षा अत्यंत आवश्यक है । विशेष शिक्षकों द्वारा कक्षा में बच्चों के आवश्यकतानुसार शिक्षा दी जाती है, बच्चों का पूरा ध्यान रखा जाता है और पूरा सहयोग दिया जाता है । स्कूल जाने के बाद अभिभावकों ने बच्चों के व्यवहार (ब्रश करना, खाना खाना, कपड़े पहनना, एक जगह पर बैठना, अक्षरों को पहचानना,पढ़ना-लिखना,बातों को समझना आदि) में बहुत परिवर्तन अनुभव किया । आटिज्म स्पेक्ट्रम डिसआर्डर वाले बच्चों के सभी अभिभावकों को अपने बच्चे के भविष्य को लेकर बहुत ही चिंता, दुख, हताशा और निराशा रहती हैं । उन्हें इन चुनौतियों का सामना करने के लिए परिवार, शिक्षक और समुदाय का सहयोग महत्वपूर्ण है । उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा , समय-समय पर सामाजिक समर्थन प्रदान करने से ऑटिज्म बच्चों की समस्याओं को समझने और उसे दूर करने की संभावना बढ़ सकती है।

संदर्भ सूची

- अल् ताहिर, (2015). अटैचमेंट बिहेवियर इन चिल्ड्रन विद ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर. एडवांस इन मेंटल हेल्थ एंड इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी, 9, 79-89.
- इनोई, वाडा एवं निवोका, (2014). रिडिंग एविलिटी एंड देयर रिलेशनशिप टू अदर कोगनेटिव कमपोनेन्ट्स इन चिल्ड्रन विथ हाई फंक्शनिंग परवेसिव डेवलोपमेन्टल डिसआर्डर. जनरल ऑफ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च 30, 355-358.
- एडवुड, टी. (1995). एस्पर्जर सिंड्रोम आ गाइड फॉर पैरंट्स
- एनन, (2008). ग्रुप इनटेनसिव फेमेली ट्रेनिंग फार प्रीस्कूल चिल्ड्रन विथ ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसआर्डर. बिहेवियर इंटरवेंशन, 23(3), 165-180
- ऐशबी, (2015). एजुकेशनल इंनक्लूजन फॉर चिल्ड्रन विथ ऑटिज्म इन पलेस्टिने थीसिस.

- कोलमैन, (1982). अ सर्वे ऑफ नालेज अबाऊट ऑटिज्म अमंग एक्सपर्ट एण्ड केयरगीवर्स बिहेवियर डिसऑर्डर. 7, 189-196.
- गुटस्टेन, (2007). ईवेल्यूशन ऑफ दा इफेक्टीवनेस आफ रिलेशनशिप डेवलेपमेंट इन्टरवेंशन प्रोग्राम ऑटिज्म. 11(5), 397-411.
- चेम्बर्स, (2008). एडल्ट एटीट्यूटस टूअर्ड बिहेवियर ऑफ ए सिक्स ईयर ओल्ड बॉय विथ ऑटिज्म.जनरल ऑफ ऑटिज्म एंड डेवलोपमेन्ट डिसआर्डर, 38(7), 1320 .
- जेन्स, (2015). ऑटिज्म इन अरबी चाइल्ड एजुकेशन माण्टेसरी इन्वायरमेंट पैरेन्ट्स एण्ड टीचर्स पर्सपेक्टिव. एम. एड . थिसिस, आकलैंड यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी.
- जुलेन, (2004). हेल्थ एंड सोशल केयर नीड्स ऑफ फैमिली केयस् सपोर्टिंग एडल्ट् विथ ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर. अमेरिकन जर्नल ऑफ आर्थोसाएका , 8, 425 – 444.
- जोब्रोली, (2004).मदर्स सपोर्टिंग चिल्ड्रन विथ ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसआर्डर. जनरल ऑफ ऑटिज्म सोसाइटी, 8(11), 409-423.
- डेल, (2006). मदर एट्रीब्यूशन देयर चाइल्ड ऑफ ऑटिज्म स्पेक्ट्रम. जनरल ऑफ ऑटिज्म एंड डेवलपमेंट डिसऑर्डर , 1015, 465-479.
- डेलीवो, (2017). ट्रांसलेटिंग स्टूडेंट्स विथ ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसआर्डर फ्राम स्कूल टू सोसाइटीज. अवैलाबल फ्रॉम प्रोकुस्ट डिसर्टेशन एंड थीसिस ग्लोबल (1885103659) .
- दास, (2010). चिल्ड्रन विथ डिसएबिलिटी इन प्राइवेट इन्क्लूशन स्कूल इन मुम्बई. एक्सपीरियन्स एण्ड चैलेन्ज , 58 , 1323-1335 .
- नेगेला, (2011). इवेल्यूट दा इफेक्ट ऑफ काउंसलिंग फार मदर्स टू कोप देयर आटिस्टिक चिल्ड्रन. जनरल ऑफ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च , 23, 228-233.